साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ. अशोक मर्डे

डॉ. विनोदकुमार वायचळ

Scanned with CamScanner

साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

Scanned with CamScanner

साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

सम्पादक

डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे

डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

अमन प्रकाशन

कानपुर

Scanned with CamScanner

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पुस्तक	: साहित्य साधना (डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ)
सम्पादक	: डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
आई.एस.बी.एन.	: 978-93-91913-00-7
संस्करण	: प्रथम, सन् 2021
©	: सम्पादक
मूल्य	: ₹ 795.00 मात्र
प्रकाशक	: अमन प्रकाशन 104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.) मो. : 09839218516, 9044344050 फोन : 0512-3590496 (ऑफिस)
शब्द सज्जा	: अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर
मुद्रक	: आरबी.ऑफसेट प्रिंटर्स, नौवस्ता, कानपुर

SAHITYA SADHNA (Dr. Devidas Engley Gourav Granth)

Edited by : **Dr. Ashok Vasantraw Marde, Dr. Vinodkumar Vaychal**

Price : Rs. Seven Hundred Ninty Five Only

Scanned with CamScanner

भाग – 2

अ.क्र.	आलेख का शीर्षक / लेखक	पृ.क्र.
01	कर्तृत्ववान शिष्य *डॉ. ज्ञानराज गायकवाड़ 'राजवंश'*	268–271
02	अज़ीज़ दोस्त के अवकाश के बहाने *प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण*	272–277
03	हमें तो तूफानों से खेलने का शौक है वरना... *प्रो. डॉ. मधुकर खराटे*	278–281
04	निष्ठावान अध्यापक *प्रो. डॉ. सुधाकर शेंडगे*	282–283
05	हमारे अज़ीज दोस्त *डॉ. भीमराव पाटील / डॉ. रघुनाथ देसाई*	284–285
06	ज्ञानयात्री *प्रो. डॉ. मारुती शिंदे*	286–290
07	बंधुवर स्नेही–कवीर सूत्र के निर्वाहक *प्रो. डॉ. भरत सगरे*	291–294
08	सच्चा स्नेही एवं आदर्श मार्गदर्शक *प्रो. डॉ. राणू कदम*	295–299
09	एक हिन्दी सेवी मित्र *प्रो. डॉ. गणपत राठोड़*	300–301
10	ज्ञानयात्री अध्यापक *प्रो. डॉ. रणजीत जाधव*	302–304
11	बीते–बदलते समय के साक्षी *प्रो. डॉ. अनिल काळे*	305–307
12	असाधारण व्यक्तित्व के धनी *प्रो. डॉ. अशोक मर्डे*	308–311
13	बड़े भाई 'आण्णा' *प्रा. युवराज गोसावी*	312–313
14	मेरे जीवन के सच्चे शिल्पकार *डॉ. संभाजी निकम*	314–317
15	स्मृति–सत्ता–संभाव्य के सिध्द सरस्वती सुत *डॉ. विनोदकुमार वायचळ*	318–322

Scanned with CamScanner

स्मृति–सत्ता–संभाव्य से सिद्ध सरस्वती सुत

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

यूँ तो मानव के जीवन में लगभग सारे रिश्ते–नाते–सम्बन्ध परमपिता परमात्मा की इच्छा से ही तय होते हैं, किन्तु कुछ ऐसे भी नाते होते हैं, जो न केवल आपके जीवन को दिशा देते हैं, अपितु आपकी स्मृति (भूतकाल), सत्ता (वर्तमान काल) और संभाव्य (भविष्य काल) पर ऐसे छा जाते हैं कि आप उनके प्रभाव से किसी भी प्रकार मुक्त नहीं हो सकते। मेरे व्यक्तिगत जीवन में डॉ. देवीदास इंगळे सर जी जैसे सिद्ध सरस्वती सुत का वही स्थान है, जो माता–पिता–गुरु–मार्गदर्शक का रहता है।

एम्. ए. द्वितीय वर्ष में डॉ. देवीदास इंगळे जी भी एक पूर्णकालीन अध्यापक के रूप में आये। साथ में उनके प्रिय शिष्य श्री. (डॉ.) अशोक मर्डे सर भी आया करते थे। प्रथम वर्ष में जस–तस उत्तीर्ण होने के बाद नेट–सेट की परीक्षा देने हेतू कम–से–कम बी–प्लस श्रेणी अर्जित करना अत्यावश्यक हो गया था। उस समय आज की तरह अंक मिलते नहीं थे, उस पर मैं विज्ञान शाखा से आया और 'लिखे मूसा, पढ़े ईसा' इस कहावत के अनुसार हस्ताक्षर होने के कारण परीक्षा का डर तो सताने लगा था। एम्. ए. द्वितीय वर्ष में चार प्रश्नपत्र थे – 'विशेष रचनाकार के रूप में मन्नू भंडारी', 'हिंदी साहित्य का इतिहास', 'भाषाविज्ञान', और 'साहित्यशास्त्र' ! मन्नू जी को पढ़ाने के लिए बी. आर. जाधव सर थे तो 'भाषाविज्ञान' पढ़ाने के लिए अशोक मर्डे सर थे, 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पढ़ाते थे डॉ. जर्रा काजी और 'साहित्यशास्त्र' डॉ. देवीदास इंगळे सर पढ़ाते थे। मैंने बिना किसी को बताये तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे से बहिस्थ छात्र के रूप में संस्कृत एम्. ए. को प्रवेश लिया था। इस कारण एक साथ दो–दो भाषा विषयों में एकसाथ स्नातकोत्तर परीक्षाओं की तैयारी करना जितना कठिन था, उतना ही आसान भी था क्योंकि दोनों विषय परस्पर पूरक थे। संस्कृत व्याकरण और संस्कृत साहित्यशास्त्र तो बाल्यावस्था से ही गुरुकुल में पढ़ा था, उसकी पुनरावृत्ति भी हो रही थी। पर आधुनिक भाषा विज्ञान और पाश्चात्य साहित्य शास्त्र के सिद्धांतों का कुछ भी ज्ञान नहीं था।

Scanned with CamScanner

ऐसे में डॉ. देवीदास इंगळे सर जी ने इस कठिन विषय को इतना आसान करने पढ़ाया कि सुकरात, अफलातून, अरस्तू, लौन्जाईनस, आय. ए. रिचर्ड्स, विलियम वर्डस्वर्थ, एस. टी. कोलरिज, कार्ल मार्क्स, सिग्मंड फ्राईड, एडलर, युंग, कारलायर आदि पाश्चात्य आलोचकों के सिद्धांतों का इतनी आसान भाषा में डॉ. देवीदास इंगळे सर विवेचन करते थे कि वे स्वयं एक व्यवहारवादी आलोचक नजर आते थे। उनके एक वर्ष के पढ़ाने में मुझे कहीं भी कभी भी ऐसा नहीं लगा कि आपका प्रिय विषय तो 'नाटक' है।

भारतीय और पाश्चात्य साहित्यशास्त्र का अत्यंत सुन्दर विवेचन गुरुदेव के मुखारविंद से सुनना सचमुच एक बौद्धिक महोत्सव है। धीरे–धीरे मेरे भीतर छिपा आलोचक विशेष कर सैद्धांतिक आलोचक सर उठाने की कोशिश कर रहा था। उस समय मैंने तुलनात्मक आलोचना पर मौलिक चिंतन आरम्भ किया था। मैंने एक बार दो–तीन रात जागकर 'भट्टनायक के भुक्तिवादी सिद्धांत और अरस्तु के विरेचनवादी सिद्धांत का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक से लंबा निबंध लिखा था, पर संकोचवश गुरूजी को दिखाया नहीं। यथासमय एम्. ए. द्वितीय (अन्त्य) वर्ष की परीक्षाएँ हुईं और पूरी कक्षा में मैं अकेला ही बी प्लस आया था। अन्य छात्र तो आश्चर्य कर रहे थे कि यह बी. एस्सी. किया हुआ छात्र एम्. ए. हिंदी में उत्तीर्ण हुआ ही कैसे? आज भी यह सपना ही लगता है। सच तो यह है कि यदि डॉ. देवीदास इंगळे सर जैसे मार्गदर्शक न मिलते तो मेरी अवस्था 'ना घर का, ना घाट का' जैसे हो जाती।

जुलाई 1999 में नतीजे घोषित हुई और अगस्त महीने में मुझे नए महाविद्यालय में विनानुदानित तासिका तत्व पर आधारित अधिव्याख्याता का काम मिल गया और मेरे जीवन में एक जबरदस्त मोड़ आ गया। बीच में गुरुदेव डॉ. देवीदास इंगळे जी का तबादला हो गया, ऐसे में उतना संपर्क नहीं हुआ। 2003 में जब प्रा. बी. आर. जाधव सेवानिवृत्त हो गए तो गुरदेव इंगळे सर फिर से रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय में पूर्णकालीन प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष के रूप में पधारे।

इसी बीच हमारे व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय की पहली बैच स्नातक होकर बाहर निकली थी। मुझे हिंदी दिन के व्याख्यान के लिए डॉ. देवीदास इंगळे सर जी को आमंत्रित करने का आदेश हमारी तत्कालीन प्रधानाचार्या डॉ. अनारताई सालुंके जी ने दिया। शायद हमारे महाविद्यालय में पहली बार इतना बड़ा आयोजन हो रहा था। मैंने सूत्रसंचालन, दलवी सर ने कृतज्ञता ज्ञापन तथा अध्यक्षीय समापन प्रधानाचार्या डॉ. अनारताई सालुंके जी ने किया पर, डॉ. इंगळे सर जी का जो व्याख्यान हुआ, वह केवल मंत्रमुग्ध करने वाला व्याख्यान था।

इसके बाद फिर एक बार प्रा. बी. आर. दलवी जी हमसे बिछड़ गए। वे औरंगाबाद के मिलिंद महाविद्यालय चले गए। ऐसे में हमारे पुनः साक्षात्कार हो गए। इन साक्षात्कारों में चयन समिति में गुरुदेव डॉ. इंगळे

Scanned with CamScanner

जी और डॉ. जर्रा काज़ी विषयतज्ञ के रूप में उपस्थित रहे और लगभग डेढ़ घंटे के साक्षात्कार में नाना प्रकार के सवालों की बौछार तो की पर अत्यंत स्नेहमयी वाणी में! साक्षात्कार में उम्मीदवार का आत्मविश्वास बढ़ाने की कुशलता जो आप में है, शायद किसी और विषयतज्ञ में नहीं होगी। हर प्रश्न के सही उत्तर पर और बढ़ावा देने की आदत ही आपके विशिष्ट पहचान बन गयी है। कहीं भी तनाव निर्माण नहीं होता। लगता है जैसे मित्र आपस में विचार–विमर्श कर रहे हों।

मैं डॉ. इंगळे सर से मिला और उन्होंने मुझे एम्. ए. प्रथम वर्ष का 'प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता' और एम्. ए. द्वितीय वर्ष का 'भारतीय साहित्य' शीर्षक ऐसे दो प्रश्नपत्र पढ़ाने का सु–अवसर प्रदान किया। जो आज तक न्यूनाधिक रूप में चल रहा है। रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रत्येक कार्यक्रम में मेरी उपस्थिति प्रायः अनिवार्य हो गयी थी। ऐसे में गुरुदेव और उनके सहयोगी प्रा. संभाजी निकम सर मुझे अपना मनाकर जो आदेश देते वह मैं पूरा करा देता।

सन् 2005 में रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय में गुरुदेव के कुशल नेतृत्व में पहली बार राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। यह वर्ष डॉ. रामकुमार वर्मा जी की जन्मशती का वर्ष था। संगोष्ठी के आयोजन में, आलेखों के सम्पादन में, सूत्र संचालन, कृतज्ञता ज्ञापन और अतिथियों की निवास व्यवस्था से लेकर संगोष्ठी में छात्रों को सहभागी करने की अनेक जिम्मेदारियों के कारण मुझमें एक प्रकार का आत्मविश्वास भी निर्माण हुआ, जो आगे चलकर बहुत काम आया। विशेषकर आलेख कैसे लिखना चाहिए? कैसे सम्पादित करना चाहिए? अशुद्धि शोधन कैसे करना चाहिए आदि–आदि।

इस संगोष्ठी के उपरांत गुरुदेव को विद्यावाचस्पति के शोध–निर्देशक के रूप मान्यता प्राप्त होने पर उनके प्रारंभिक शोधछात्रों में से प्रा. संभाजी निकम सर जी के शोध–प्रबंध को टंकित करने का काम मेरी ओर आ गया। इस शोध–प्रबंध का विषय था "डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में चित्रित स्त्री–पुरुष संबंधों के विविध आयाम" सारा शोध–प्रबंध टंकित करते–करते मुझे शोध–प्रविधि का अनमोल व्यावहारिक मार्गदर्शन भी होता रहा। परन्तु इस बीच एक तकनीकी समस्या के कारण टंकित किया मेरा सारा काम नष्ट हो गया। ऐसे समय यदि निकम सर और इंगळे सर की जगह कोई और होता तो न जाने मुझे कितनी गालियाँ सुननी पड़ती। पर दोनों श्रीमद्भागवद्गीता के 'स्थितप्रज्ञ' योगी से भी अधिक संयमी निकले। मैंने उस समय दिन–रात एक करके मात्र पंद्रह दिनों में फिर से शोध–प्रबंध मेरे एक मित्र श्री. प्रशांत राऊत की सहायता से पूरा कर दिया। निकम सर को विद्यावाचस्पति की उपाधि मिलाने पर शायद उनसे भी अधिक खुशी मुझे हुई होगी। यह भी एक बड़ा सच है कि उस समय हिंदी वर्तनी के नियमों का पालन कर टंकन करनेवाले लोग मिलते ही नहीं थे। तो एक प्रकार से मेरी इस कुशलता का विकास भी जाने–अनजाने होता रहा।

Scanned with CamScanner

धीरे–धीरे गुरुदेव के शोधालेख टंकित करने का काम भी मिलता रहा। गुरुदेव जिस ग्रन्थ का सम्पादन करते रहते उसमें भी मेरा चंचु प्रवेश होने लगा। वे मेरे आलेखों को भी प्रकाशित करने लगे। ऐसे में जाने–अनजाने गुरुदेव के घर आना–जाना चलता रहा। गुरुमाता सौ. सुनीता जी, गुरुबंधु श्री. सुदेश जी, ओंकार जी और गुरुभगिनी दीपा जी के साथ जलपान, भोजन, चर्चा आदि का अनौपचौरिक रिश्ता बन गया है। ऐसे लगता है मानो मैं स्वयं आपके परिवार का ही एक अभिन्न अंग बन गया हूँ, ठीक निकम सर, गरड सर और भड सर की तरह! मैं हर उपस्थित समस्या के समाधान के लिए गुरुदेव से ही परामर्श माँगता हूँ।

महाविद्यालयीन कार्यों में जब भी कोई कठिनाई आ जाती है, हम तुरंत गुरुदेव की सलाह लेते हैं। जहाँ तक अधिव्याख्याता पद के लिए पात्रता का प्रश्न था, पता नहीं किस कारण से मैं नेट–सेट की प्रत्येक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता था। तब पात्रता के लिए एम्. फिल. की शोधोपाधि का मार्ग दिखने लगा और रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय को यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नाशिक का एम्. फिल. का अभ्यास केंद्र प्राप्त हुआ। लातूर की एक संगोष्ठी में मैं कमलेश्वर जी से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने उन्हीं पर शोध कार्य करने का निश्चय किया। एम्. फिल. के लिए मैंने विषय चुना 'कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' : संवेदना एवं शिल्प'! परीक्षाएँ तो दीं, पर हमारे महाविद्यालय के परीक्षा विभाग और राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग के कार्य बाहुल्य की कारण लघुशोध–प्रबंध का काम समय के अनुसार नहीं हो रहा था। अन्य शोधछात्रों के लघुशोध–प्रबंध जमा हो चुके थे और कईयों को तो विद्यानिष्णात की उपाधि भी प्राप्त हो चुकी थी। मैं भी काम हो ही नहीं पायेगा, ऐसा मानकर निराश होकर गुरुदेव के सामने जाने से बच रहा था। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय की एक कार्यशाला में न चाहते हुए भी गुरुदेव से सामना हो गया। उन्होंने कुछ कहा तो नहीं, पर आँखों से न जाने ऐसा कैसे डांट दिया कि उसके बाद मात्र एक ही सप्ताह में ही लघु शोध–प्रबंध जमा हुआ और अवधि पूर्ण होने से पूर्व एम्. फिल. की शोधोपाधि प्राप्त हो गयी।

ठीक यही हाल पी–एच. डी. के समय भी हुआ। 'कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित मानवीय सम्बन्ध' विषय पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से शोधकार्य कर रहा था। आलोच्य उपन्यासों की संख्या बढ़ती जा रही थी। मुझ पर अपने महाविद्यालय के परीक्षा विभाग और राष्ट्रीय सेवा योजना का अतिरिक्त भार भी बढ़ता जा रहा था। इधर शोधकार्य का भी काफ़ी विस्तार हो रहा था। एम्. फिल. के बाद दो बार नेट परीक्षा उत्तीर्ण होने से एक प्रकार से अन्यमनस्कता तो नष्ट हो गयी, पर पी–एच. डी. की अनिवार्यता भी नहीं रही थी। मेरे साथ पंजीकरण किये अनेक शोधछात्र अपना शोधकार्य पूरा कर उपाधि भी प्राप्त कर चुके

Scanned with CamScanner

थे। परीक्षा का काम बड़ी प्रामाणिकता के साथ करने से मेरे महाविद्यालय को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद का आदर्श परीक्षा केंद्र पुरस्कार तथा राष्ट्रीय सेवा योजना में अधिक मन लगाने से डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद का उत्कृष्ट कार्यक्रमाधिकारी पुरस्कार और महाराष्ट्र शासन का भी उत्कृष्ट कार्यक्रमाधिकारी पुरस्कार भी प्राप्त होते गये। इस भागदौड़ का अनिवार्य परिणाम शोधकार्य पीछे रहने के रूप में हुआ। अंततः आठ वर्षों के परिश्रम से विद्यावाचस्पति का शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इस सम्पूर्ण कालावधि में आदरणीय गुरूजी ने एक बार भी कुछ कहा हो ऐसा स्मरण भी नहीं होता।

पी–एच. डी. की शोधोपाधि प्राप्त होते ही मात्र एक महीने के भीतर ही हमारे महाविद्यालय को यु.जी. सी. का दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन का आदेश मिला। 'स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव' शीर्षक राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के समय गुरूजी ने अनेक परामर्श देकर उसे सफल बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

गुरूजी जब हिंदी अध्यन मंडल के चुनाव में खड़े रहे और चुन कर भी आये। वह क्षण हमारे लिये अत्यधिक आनंद का क्षण था। हम गुरूजी को हमारे महाविद्यालय के प्रत्येक कार्यक्रम में आमंत्रित करने लगे। आगे चलकर गुरूजी ने ही मुझे हिंदी अध्ययन मंडल में एक निमंत्रित सदस्य के रूप में मुझे लिया। नया पाठ्यक्रम बनाते समय हम सभी ने गुरूजी के अध्यवसाय को बहुत समीप से देखा। केवल गुरूजी के प्रयास से ही मुझे प्रश्नपत्रिका बनने का काम भी मिला। गुरूजी के संपर्क के कारण ही मुझे स्नातकोत्तर शिक्षक मान्यता और शोध निर्देशक मान्यता प्राप्त हुई है।

सच कहें तो गुरूजी ही मेरी स्मृति (भूतकाल), सत्ता (वर्तमान काल) और संभाव्य (भविष्य काल) से सिद्ध सरस्वती सुत हैं। आज मैं जो कुछ भी हूँ सब गुरूजी के कारण ही हूँ। विगत तेईस वर्षों से मेरे अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन का केंद्र आदरणीय डॉ. देवीदास इंगळे सर ही रहे हैं, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। आप शासकीय नियमों के अनुसार सेवानिवृत्त तो हो रहे हैं। पर यह निवृत्ति भी आपकी प्रवृत्ति को अवरुद्ध नहीं कर पायेगी। इस सेवानिवृत्ति के बाद तो आपके लिये पूरा आकाश भी सीमा नहीं बन पायेगा। आप अपने सारस्वत कार्य को और अधिक अवश्य ही बढ़ाएंगे। इस महान कार्य को करने के लिए परमपिता परमात्मा आपको सौ वर्षों से भी अधिक निरामय आयु प्रदान करें, इसी शुभकामना के साथ शब्द–स्फीति का संवरण करता हूँ।

।। प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफलः।।

Scanned with CamScanner